

इष्यते दोषलेशोऽपि

इ उ

उक्कोसं सासायण, उव-

|                                                   |                                              |                                             |
|---------------------------------------------------|----------------------------------------------|---------------------------------------------|
| इष्यते दोषलेशोऽपि (दा.प्र.) ७६१                   | इहैव परिपाकमेति (ए.द्वा.) ३१३०               | ईर्ष्यादुच्छेदपर्शुर्मद- (ध.उ.) १६          |
| इष्यतेऽनेन नैकत्रावस्थान्तर- (न.उ.) ३०            | इहैव पापकर्माणि, (ध.क.) २५                   | ईर्ष्या रोषण ईर्ष्यालुः (पंच.) ३४           |
| इ स्यात्क्षेदे प्रकोपोक्तौ ई (अ.सं.) ७१३          | इहैव प्रोच्यते शुद्धाऽर्हिसा (अ.सा.) १२१९    | ईर्ष्या रोषो दोषो, द्वेषः (प्र.र.) १९       |
| इह किल कलिकालव्याल- (संघ) ३                       | इहैवेच्छादियोगानां (यो.दृ) २                 | ईर्ष्यालुः कुलटाकामी, (वि.वि.) ८१४१८        |
| इह के मृषाप्रसक्ता, (प्रश्न.) ५०                  | इहोद्दामः कामः खनति (अ.सा.) ४११२             | ईर्ष्याविषाद[विष]मैर्विषय- (दा.प्र.) ११४४   |
| इह चानुभवः साक्षी व्या- (अ.सा.) १२१४०             |                                              | ईशः स्वामिनि रुद्रे च, (अ.सं.) २१५३१        |
| इह चायं परपुरप्रवेशश्चित्र- (यो.शा.) ७३६          |                                              | ईशानकोणगच्छया (त्रै.प्र.) १२५५              |
| इह जगज्जनतावशकारकं (ध.उ.) १४                      |                                              | ईशानकोणे यदि वै (मे.वि.) २१८                |
| इह जीवतां परिभवो, (आत्मा) ४९                      |                                              | ईशानां गुणनाशोऽपि, (सूक्त.१) ४५६            |
| इह देवाः प्रवीणेन (प्र.चि.) ४११८४                 |                                              | ईशान्यां कुर्वतां पूजां, (वि.वि.) ११९०      |
| इह द्वितीयेषु कषायकेषु, (आ.प्र.) ३३               |                                              | ईशोऽस्मिन्नपनच्छलाच्छ्रित- (ऋ.श.) ७०        |
| इह-परलोकविरुद्धं (कु.उ.) १९                       | ईः पद्यायामव्ययस्त्वौ (ए.ना.) ४              | ईश्वरः परमात्मैव तदुक्तव्रत- (शा.वा.) ३१११  |
| इह पर्यटनपराङ्मुखाः, (शा.सु.) ११११५               | ई ऐ औ स्वरसंयुक्ता (ह.कां.) ३८               | ईश्वरः प्रेरकत्वेन कर्ता (शा.वा.) ३११       |
| इह प्रकृत्या स्वच्छोऽपि, (अ.वि.) १                | ईकारे सत्यपि ज्ञाशक्, (वा.प्र.) ४७           | ईश्वरः स्वामिनि शिवे (अ.सं.) ३१५१७          |
| इह मनुजपतीनां चक्रिणा- (सु.अ.) ३३३                | ईगितस्सूत्रनिर्दिष्टे (क.क.) ६               | ईश्वरसमीरकौणपवल्लीन्द्रो- (त्रै.प्र.) ६०४   |
| इह यच्छसि सुखमुदित- (शा.सु.) १०११५                | ईडच्, पाने तु पीडच् (क.क.) १९५               | ईश्वरस्य न कर्तृत्वम- (अ.वि.) ३११८          |
| इह ये गुणपुष्पपूरिते (अ.सा.) ७११४                 | ईडापिङ्गलयो रोधे (प्र.चि.) ४११००             | ईश्वरी पार्वती गौरी, (शा.ना.) २६            |
| इहलोके परलोके, (यो.शा.) ३२२                       | ईण्डेरिका तु वटिका (अ.चि.) ३१६               | ईश्वरो नाम सन्तोषी (त.अ.) २४६               |
| इह लोकेऽपि कल्याणं, (ध.क.) ३३७                    | ईतिदुर्भिक्षरोगाग्निग्रह- (प्र.चि.) ४११७३    | ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी (त्रै.प्र.) ११९० |
| इह लोकेऽपि दुःखानि, (ध.क.) ३३८                    | ईतिरजन्ये प्रवासे स्यादूतिः (अ.सं.) २११५७    | ईषदवनतभ्रमता-मभिसरणे (मा.प.) ११०            |
| इह वर्गाश्च चत्वारः (उ.प्र.) २७                   | ईत्यनीतिप्रजारोग-रणाद्यु- (वि.वि.) ८१३१      | ईषदुन्मज्जनाभोगो (द्वा.द्वा.) २११२२         |
| इह विश्वसं यातायातं (यो.शा.) ९५५                  | ईदन्ताः स्युर्मोड्व (क.क.) २२१               | ईषदुष्णे कवोष्णः स्यात् (श.र.) ६१११         |
| इह सदसदादिरूपे, जीवे (मा.प.) १९२                  | ईदन्तौ वीङ्क् खादनकान्ति- (क.क.) १७८         | ईषदुःसुषु खल्यू (वि.चि.) १०९                |
| इह समता पीडायाः, (मा.प.) २०७                      | ईदृक्पर्यायनिष्पन्नः, (ध.सं.) १३०            | ईषदुःस्वाक्षरपञ्चकोदि- (प्र.र.) २८३         |
| इह सिद्धाणं पाणसुखं, (आ.प्र.) १७५                 | ईदृग्गणिविहितगणः, (मा.प.) २९१                | ईषदुःवितर्कणे त्वाहो (पंच.) १३१             |
| इह सिद्धिषु वैचित्र्ये बीजं (द्वा.द्वा.) २६१२२    | ईदृग्भङ्गशतोपेताऽर्हिसा (अ.सा.) १२१५६        | ईषदुःप्रवेशोऽपि स्नेह- (दृ.श.) ६६           |
| इह हि गृहिणां निर्वाणार्हं (दा.प्र.) ६११०१        | ईदृग्विधं कर्म कियद्विधं (जै.त.) २८२         | ईषिका स्यादिषीकेवे- (श.र.) ४१२९४            |
| इह हि सर्वबहिर्विषयच्युतं (अ.सा.) ११११९           | ईदृग् विभो ! प्राणिगण- (वि.प्र.) १३७         | ईहते शिवसुखं व्रतखिन्न- (वा.श्री.) ११       |
| इह हेतुनर्थानां, -मप्रस्तावे (सूक्त.१) २५६        | ईदृशं श्रमणं दृष्ट्वा (त.अ.) २२४             | ईहां संशयमेवाहुः, परे (ज्ञाना.) २१६         |
| इहादौ वचनक्षान्तिर्धर्मक्षान्ति (द्वा.द्वा.) २८१६ | ईदृशी भूतमायेयं या (अ.उ.) २१५५               | ईहापोहौ च मीमांसा, (ज्ञाना.) ३१३३           |
| इहापि फलदायी स्यान्नियमो (धर्मो.) ३४              | ईदृशे मलपङ्ककाढ्ये (प्र.चि.) ७१४२७           | ईहितविशेषनिर्णयोऽवायः (प्र.त.) २१९          |
| इहापि लब्धयश्चित्राः परत्र (द्वा.द्वा.) २६१३      | ईदृश्यपि समभावो, (मा.प.) ९५                  | ईहितविशेषनिर्णयोऽवायः (प्र.मी.) १११२८       |
| इहापुनर्बन्धकभावमन्तरा (शं.पा.१) ९१               | ईनोंशुमाली तीक्ष्णांशुः, (शा.ना.) ६५         |                                             |
| इहामगर्भेषु च यान्ति (दा.प्र.) ३३२                | ईप्सितार्थप्रदः सर्व-व्याप- (वि.वि.) ११४     |                                             |
| इहाऽमुत्र च वैराग्य, (अ.क.) २४६                   | ईप्सुर्मोक्षमनल्पसौख्य- (ध.उ.) १७            |                                             |
| इहामुत्र फलापेक्षा भवा- (यो.वि.) १५१              | ईर्या सामयिके सुचित- (म.वि.) १४              |                                             |
| इहामुत्र फलापेक्षा भवा- (द्वा.द्वा.) १३११०        | ईर्यादिविषया यत्ना मनो- (ध्या.) १०           |                                             |
| इहामुत्र विरुद्धं य- (वि.वि.) ८१३९९               | ईर्यादिव्यवहारोऽपि, (स.प.) ८८                |                                             |
| इहारके जाग्रदयैर्जनैर्यः (सूक्त.२) १००            | ईर्यापथप्रसङ्गश्च समोऽत्र (द्वा.द्वा.) ३०१२२ | उं प्रश्नेऽङ्गीकृतौ रोषेऽप्युं (अ.सं.) ७५   |
| इहास्यत शुकाननं (शु.वै.) १३                       | ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेप- (षड्.) ७           | उ इत्युच्चैर्गतौ मोक्षे, (श्री.त.) २०११४    |
| इहाहिंसादयः पञ्च सुप्रसिद्धा (यो.दृ) २१४          | ईर्याभाषैषणादान-निक्षेपो- (यो.शा.) ३५        | उऊ अं स्वरसंयुक्तास्तपा (ह.कां.) ३७         |
| इहेदमिति सम्बन्धः (ए.द्वा.) १४१३०                 | ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेपो- (तत्त्वा) ९५      | उ ओ ऋ अर् लृ अल् ए (वि.चि.) ६               |
| इहैव तैर्जितः सर्गो येषां (अ.सा.) १५१४४           | ईर्याभाषैषणामात्रा- (न.सं.) १८               | उकारं हृदयाम्भोजे (यो.शा.) ८४८              |
| इहैव निन्द्याः शिष्टानां (दा.प्र.) ६१४६           | ईर्यासमितिरक्षुतं (प्र.चि.) ५११५०            | उक्कोसं सासायण, उव- (आ.प्र.) ८              |